Sub - Philosophy

B.A. I. (Hons) Paper - II

Realism यथार्थवाद या वस्तुवाद

यथार्थवाद प्रत्ययवाद का विरोधी मत है। इसके अनुसार वस्तुएँ मन से बाहर अपनी स्वतंत्र सत्ता रखती है कोई भी ज्ञान प्राप्त करने वाला ज्ञाता हो न हो किन्तु वे वस्तुएँ रहेंगी ही। उन वस्तुओं का रहना ज्ञाता पर निर्भर नहीं है। बाह्य पदार्थ अपने स्वरूप में सत्य है जो कुछ भी नहीं है। वह इस अर्थ में सत्य है कि उसका स्वयं का किसी भी ज्ञाता के निमंत्रण से स्वतन्त्र अपना निजी जीवन एवं क्रिया है।

वस्तु का मन से परे अपना अलग का अस्तित्व मानने वाले इस यथार्थवाद के इतिहास पर दृष्टिपात करने पर हम उसके दो प्रकार पाते हैं। प्रथम प्रकार के यथार्थवाद में डेकार्ट और लॉक के विचार हैं और यह विचार-धारा हेगेल से पूर्व रही है। द्वितीय विचार धारा हेगेल के बाद का है जो कि हेगेल के विचारों के प्रतिक्रियात्मक परिणामों का स्वरूप है।

कुछ दार्शनिकों के अनुसार हम बाह्य पदार्थों का ज्ञान सहज ही उन्हीं के वास्तविक स्वरूप से पा लेते हैं। हम वस्तुओं को सीधे देखते तथा जानते हैं। वस्तुएँ बिलकुल वैसी ही है जैसे की वे हमें दिखाई देती है और वे हमें बिलकुल वैसी ही दिखाई देती है जैसी कि वे वास्तव में है। वस्तु के दिखाई देने वाले स्वरूप और उनके वास्तविक स्वरूप के बीच किसी भी प्रकार की विभेदक रेखा नहीं है। हम सदा वस्तु को बिलकुल

Scanned with CamScanner

उसके स्वरूप में ही देखते तथा जानते हैं, किन्तु यह विचार यदि माना जाय तो यह एक कठिनाई को नहीं सुलझा पाता और यह कठिनाई है, हमारे जब भ्रम होने वाले भ्रम और वास्तविक प्रत्यक्षीकरण के भेद को। दूसरे शब्दों में यह सिद्धान्त भ्रमात्मक प्रत्यक्ष और वास्तविक प्रत्यक्ष में भेद कैसे होता है। यह सुलझाने में सर्वथा असमर्थ है। हमें उन वस्तुओं का ज्ञान सीधे रूप से प्राप्त होता है इस विचारधारा को प्रत्यक्षीकरण (Presentationism) के नाम से पुकारा जाता है।

दूसरा सिद्धान्त जिसे Representationism का नाम दिया जाता है वह डेकार्ट तथा जॉन लॉक का मत है। डेकार्ट के अनुसार वस्तुओं का अपना अलग स्वतन्त्र अस्तित्व है और किसी भी मन के नहीं रहने पर भी यह अस्तित्व रहेगा। लॉक के अनुसार भी बाह्य पदार्थ हमारी संवेदनाओं के कारण स्वरूप हैं और वे अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखते हैं इनके अनुसार हम वस्तुओं को सीधे नहीं देखते या जानते हैं वरन हम उन्हें उन चित्रों द्वारा जानते हैं जो कि इन मूल वस्तुओं के कारण तथा इनके अनुरूप हमारे मन पर अंकित हो जाते हैं। हम वस्तुओं को सीधे उनके असली रूप में न देखकर उन्हें उनके प्रतिरूप के रूप में ही जानते हैं। यद्यपि बाह्य जगत में उनका स्वतंत्र अस्तित्व है डेकार्ट और लॉक पदार्थों के दो गुण मानते हैं- प्राथमिक और गौण। प्राथमिक गुण स्वयं वस्तु में पाये जाते हैं और गौण गुण वस्तुओं में नहीं होते। बर्कले ने ज्ञान के दो विषयों ज्ञान की क्रिया और ज्ञान की वस्तुओं

Scanned with CamScanner

में बताता है। Meinong भी वस्तुवादी विचारधारा के दार्शनिक हैं किन्तु उसने Brentano के दो घटकों के अतिरिक्त ज्ञान का एक तीसरा भी घटक बताया और वह है उस ज्ञान का विषय। Meinong के अनुसार जब हम किसी बीती बात को याद करते हैं। तब हम उसके सामने न रहने पर भी उसे स्मरण कर लेते हैं और इस प्रकार हम जानते हैं कि इसका हमें ज्ञान प्राप्त होता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ज्ञान में दो घटक ही नहीं।

वरन किसी वस्तु के सम्बन्ध में जो हमारे मन में जो कुछ होता है वह भी महत्वपूर्ण है। इसे हम ज्ञान के विषय की संज्ञा से अभिहित करते हैं। Brentano और Meninong के विभिन्न विचारों के यथार्थवादी को दो भिन्न रूप दिये। Brenteno की विचार धारा को Popular Realism, Common sens Realism या Realism तथा Meinong के यथार्थवाद को Criticed Realism का नाम दिया जाता है।

नवीन यथार्थवाद के अनुसार ज्ञान में ज्ञान की क्रिया तथा ज्ञान की वस्तु दो घटक होते हैं। इस विचार धारा के अनुसार बाह्य वस्तु का ज्ञान हमें ठीक उसी रूप में मिलता है जैसा कि वह बाह्य जगत में स्थित है। हमारी इन्द्रिया हमारे मन को जैसा कि पदार्थ बाह्य जगत में है ठीक वैसा ही पदार्थ देती है वस्तुएं वास्तव में जैसी हैं। उसी के अनुरूप हमें उनका ज्ञान भी मिलता है। उदाहरणार्थ सामने रखी कलम का ज्ञान ठीक वही कलम ही है उससे भिन्न कोई भी और चीज हो ऐसा नहीं है। सामने की कलम तथा हमारे मन द्वारा ज्ञात कलम से कोई भी भेद नहीं है। इस प्रकार नवीन यथार्थ वादियों के अनुसार बाह्य स्थित पदार्थ तथा उनके ज्ञान में किसी प्रकार का भेद नहीं बतलाया जाता ये दोनों अभिन्न हैं समान ही एक हैं। इस दोनों को एक कर देने के कारण नवीन यथार्थ वाद

ज्ञानशास्त्रीय एकवाद की संज्ञा से भी सम्बोधित किया जाता है। सामान्य व्यक्तियों का भी ज्ञान के विषय में ऐसा ही दृष्टिकोण मिलता है इसलिए इस मत को Common sense Realism भी कहा जाता है।

नवीन यथार्थवाद ज्ञान को पदार्थ के अनुरूप कहकर अपनी बात को चरम सीमा पर पहुँचा जाता है जहाँ कि प्रत्ययवादी यह कहते हैं कि बाह्य पदार्थ प्रत्यय के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। वहाँ नवीन यथार्थवाद के अनुसार ज्ञान स्वयं बाह्य पदार्थों के समरूप है और बाह्य पदार्थों के अतिरिक्त फिर और कुछ नहीं है ये दोनों सिद्धान्त चरम सीमा पर हैं। एक प्रत्यय की ओर दूसरा पदार्थ की ओर। इसके अतिरिक्त नवीन यथार्थवाद वस्तुओं का बाहर स्थित होने और उनके ज्ञान को उन्हीं के समान बताते हुए हमारे प्रत्यक्षीकरण में होने वाले भ्रम को नहीं समझा पाता। यदि पदार्थों का ज्ञान ठीक वैसा ही होता है जैसा कि वे वास्तव में बाहर स्थित हैं, तब क्यों कभी-कभी अंधकार में हमें रस्सी का टुकड़ा साँप होने का एक मात्र भ्रम करा देता है। हम क्यों किसी चाँदनी रात में दूर की चिकनी रेत को एक जलाशय समझ बैठते हैं यह एक ऐसा प्रश्न है कि जिसका समुचित उत्तर नवीन यथार्थवाद के पास नहीं है।

नवीन यथार्थवाद के इन्हीं दोषों के कारण Critical Realism का आविर्भाव हुआ। इस सिद्धान्त के अनुसार बाह्य स्थित पदार्थ और उस पदार्थ के ज्ञान के रूप में भेद है। पदार्थ का ज्ञान स्वयं वही पदार्थ नहीं और न वह उसके अनुरूप ही है वस्तुएँ बाह्य जगत् में स्थित होती हैं और उनके विषय जो हमारे मन में कुछ होता है उसे हम जानते हैं उस पदार्थ को नहीं जानते Meinong के अनुसार ज्ञान क्रिया और पदार्थ के बीच एक और

भी व्यक्त होता है वह है विषय वस्तु (Content) जो कि उस वस्तु के लिए हमारे मन में होता है यह विषय वस्तु ही है जिसे कि हम जानते है। इसके अनुसार पदार्थ का बाह्य जगत् में अस्तित्व तो है, किन्तु हम जो कुछ जानते है वही पदार्थ नहीं है हम पदार्थ को नहीं जानते हो नवीन यथार्थवाद ज्ञान केवल दो व्यक्त मानते हुए विषय वस्तु का प्रमाण करते है। इस प्रकार ऐसा कहा जा सकता है कि Criticed Realism प्रत्ययवाद और नवीन ~~प्रत्ययवाद~~ यथार्थवाद के बीच सामंजस्य स्थापित करने का एक सराहनीय प्रयास है।

पदार्थो और उनके ज्ञात रूप में भेद करने के कारण Criticed Realism और ज्ञानशास्त्रीय द्वन्दवाद भी कहा जाता है। लॉक महोदय भी ज्ञानशास्त्र के क्षेत्र में द्वैतवाद का समर्थन करते है बावजूद इसके लॉक के विचारों तथा Criticed Realism के विचारों में मौलिक अन्तर है लॉक के अनुसार sense deta हमारे मन के स्वयं के होते है, किन्तु Criticed Realism के अनुसार वे मानसिक नहीं होते। इस सिद्धान्त के अनुसार ये प्रदत वस्तु से आते है वे वस्तु के सार होते है। वे वस्तु के दूत बनकर हमारे मन में आते है, ये प्रदत मानसिक न होकर भौतिक होते है। वे वस्तु और मन के बीच आकार ज्ञान में व्यवधान नहीं डालते वरन चश्मे के भाँति आँख और वस्तु के बीच आकर सहायक होते है।

Dr. Saroj Ram
Dept. of Philosophy
D. K. College, Dumraon

Scanned with CamScanner